प्रातःक्लास 1.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। परमपिता परमात्मा शिव भगवानुवाचः शालीग्रामों प्रति। बाबा ने जो यह महावाक्य उच्चारे उनको और कोई समझ न सके। सिर्फ बच्चे ही समझ सकते हैं। यह है पढ़ाई। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। इसमें सिवाय पढ़ाई के और कोई बात नहीं है। याद भी क्यों कहें? ज़रूर जो पढ़ाई पढ़ाते हैं, उनको पढ़ने वाले याद करते होंगे। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं उनको खास कहना पड़ता है मैं दूर देश से पढ़ाने आता हूं। अभी मुझे याद करो। बाप को कहना पड़ता है; क्योंकि यह नई प्रकार का टीचर है। और कोई भी टीचर ऐसे नहीं कहेंगे कि मुझे याद करो। स्टूडेन्ट ऑटोमेटिकली याद करते हैं। यहां तो कहना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो रूहानी बाप हमको पढ़ाते हैं। यह है ही निश्चय की बातें। माया रूपी दुश्मन तुमको भुला देती है। न भुलाने की बात भी भुला देती है। नहीं तो शिक्षा देने वाले को कब कोई भूलते नहीं हैं; परन्तु यहां बच्चे कह देते हैं सुप्रीम टीचर को कि हम स्टूडेन्ट आपको भूल जाते हैं। बाप कहते हैं भूल जाने से तुम्हारा ही नुकसान होता है। तुम आत्माएं जो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने आये हो, उनको तो ज़रूर याद करना है। यही डिफीकल्ट है; क्योंकि वह बाप है निराकार। और सारे 5000वर्ष में कब कोई ने ऐसा कहा नहीं है हे बच्चों, मुझे याद करो। सुप्रीम बाप को याद करना पड़े। ऐसा कब होता नहीं है। सतयुग में भी नहीं होता। (फिर) कल्प के संगमयुग पर ही तुम याद करते हो। यह ....हुई ना। बाप, टीचर, गुरू को निरन्तर याद करना (है)। तब ही विकर्म विनाश हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बाप यह शिक्षा देते हैं। इसमें हठयोग (की) क्रियायें आदि कुछ नहीं हैं। नामी–ग्रामी महाऋषि जो हैं सभी कुछ न कुछ हठयोग सिखलाते ही हैं। विलायत में भी जाकर हठयोग सिखलाते हैं। अखबारों में भी चित्र आते हैं। जैसे–गर्भ में बच्चा होता है ऐसा करन्डरा(कुछ डरा) कर (सुला) देते हैं। कहेंगे ब्रह्म को याद करो। वह भी पूरा नहीं करते। यह सभी है भक्तिमार्ग। वह होता ही है कलियुग में। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। जिसका सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता ही नहीं है। संगमयुग पर ही बेहद का बाप आते हैं। यह किसको भी पता नहीं है तो ज़रूर मूँझेंगे। कोई शास्त्र में भी ऐसी बात नहीं है। बाप पढ़ाते हैं तो ज़रूर कुछ लिखत में भी होना चाहिए ना। इस पढ़ाई की लिखत भी संगमयुग पर होती है। तुम पढ़ते हो–लिट्रेचर, मैगज़ीन आदि छपते हैं। बच्चों को यह पक्का होना चाहिए हम संगमयुग पर हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बच्चे पुरुषोत्तम अक्षर भी भूल जाते हैं। तुम्हारी भाषा अर्थ सहित एक्युरेट होनी चाहिए कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग है। पुरुषोत्तम अक्षर बहुत ज़रूरी है। उनको फिर समझानी भी देनी है। कलियुग अंत के भी मनुष्य देखो, सतयुग आदि के भी मनुष्य देखो। कलियुग का अंत और सतयुग के आदि का यह है संगमयुग। इनको ही कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। और जो भी युग होते हैं उनमें तो नीचे ही उतरना होता है। उनको कल्याणकारी नहीं कहेंगे। दिन–प्रतिदिन उतरते ही हैं। कला–कमती होती जाती है; इसलिए कोई भी युग को पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। सर्विसेबुल बच्चे ही ऐसी–2 प्वाइन्ट धारण कर और समझा सकते हैं। महारथी, घोड़े सवार, प्यादे नम्बरवार तो हैं ना। यह तो तुम भी जानते हो, बाप भी जानते हैं। जिसमें बाप प्रवेश करते हैं वह भी जानते हैं। कोई तो कुछ भी नहीं समझते। अपना ही देहअभिमान बहुत रहता है कि हम समझा सकते हैं; परन्तु बाप तो जानते हैं ना; परन्तु नाम लेने से फंक हो जाये; इसलिए कहना नहीं होता है। यह बाप ही समझाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल ज्ञान का सागर है। मनुष्य समझते हैं वह सभी के दिलों को जानते हैं। जानी–जाननहार है; इसलिए नॉलेजफुल है। बाप कहते नहीं। यह रांग है। मैं नॉलेजफुल क्यों कहलाता हूं सम्मुख बैठ समझाते हैं। बाप ही समझाते हैं, और कोई समझाने वाला है नहीं। बेसमझ को समझ देने वाला एक ही बाप है। यह पढ़ाई है। बाप कहते हैं मैं मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज रूप हूं। इस कारण मैं सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानता हूं; इसलिए मुझे नॉलेजफुल कहते हैं। यह कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। वह खुद ही कहते हैं हम रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को नहीं जानते हैं। यह शास्त्रों में भी है। यह है

बेहद की बातें इनसे ही फिर हद की नाटक आदि बनाते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं हद के बाप से हद के(का) (वर्सा), बेहद के बाप से बेहद की(का) वर्सा मिलेगा। (बेहद) का वर्सा देने वाला बाप को ही सभी याद करते हैं। ..... वह क्या वर्सा देते हैं यह किसको भी समझ में नहीं आता। गायन करते हैं; परन्तु उनको यह पता नहीं (कि) बेहद का टीचर भी है। वह पतित–पावन है। लिबरेट करने वाला है। सद्गति करने वाला है। भल बाप भी (कहते) है; परन्तु वह कब, कैसे आवेगा यह बिचारों को पता नहीं है। शास्त्रों में लिख दिया है कलियुग की आयु (इतनी) लम्बी है। यहां भी कोई आया था, कहा यह क्या बैठ लिखा है? यह तो तुम्हारी कल्पना है। तुम्हारी (कल्पना) को ही सभी फॉलो करते हैं। संसार बना ही नहीं है। जिसको जो आता है सुनाते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। वह ही यह सभी खु(खे)ल करते हैं। ईश्वर का यह सारा खेल है। ऐसे–2 भी बहुत निकलते हैं। एक/दो से सुनकर (बो)लते रहते हैं। उतरते–2 कलियुग के अंत में आ जाते हैं। फिर जब कलियुग का अंत ,सतयुग की आदि होती है तब ही चढ़ती कला होती है। यह सभी तुम बच्चों की ही बुद्धि में बैठता है। भक्तिमार्ग में उतरते ही रहते हैं। भक्ति को कहेंगे उतरती मार्ग। ज्ञान है चढ़ती मार्ग। बाप आवेंगे चढ़ जावेंगे। फिर समय पर उतरना है। पुनर्जन्म तो सभी को लेना ही है। पहले आधा कल्प प्रारब्ध मिलती है। उसमें भी कला तो उतरती जाती है। रावण राज्य है ना। डिनायस्टी अक्षर भी लिखना पड़े। कहां–2 बच्चे भूल जाते हैं। फिर आपस में सेमिनार आदि करते हो तो करैक्ट करना चाहिए। भूलें तो होती हैं। अभूल तब बनेंगे जब याद की यात्रा में रहेंगे। फिर तुम्हारे लिखने, करने ,समझाने में बड़ी ताकत रहेगी। जितना (यो)ग में रहेंगे उतनी ताकत आवेगी। फिर कोई लिखत आदि में भी भूल न होगी। (अभी) तो भूलें बहुत होतीं हैं। शुरू में भूलें ही भूलें थी। अभी तो तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान बैठा है। शुरू में इतना ज्ञान थोड़े ही था। अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते रहते हैं तुमको गुह्य–2 बातें सुनाते रहते हैं। ऊँच दर्जा तुम पढ़ते जा रहे हो। दिन–प्रतिदिन समझानी मिलती जाती है। तुम भी फ़ील करते हो आज बाबा ने बहुत अच्छी प्वाइन्ट्स समझाई वह धारण करते बाकी छोड़ना पड़ता है। कब अच्छा भोजन मिलता है तो फिर हल्का भोजन खाने दिल नहीं होती। हलवा पूरी आदि खाने की ही दिल होती है। यह भी कोई ऐसे हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप हमको बहुत मीठी–2 गुह्य प्वाइन्ट देते हैं। जो बच्चे अच्छी रीत समझते हैं वही समझा सकते हैं। बाप भी समझते हैं इन पर धारणा अच्छी होती है। यह अच्छी सर्विस करते हैं। बुद्धि किसकी अच्छी खुल जाती है ,किसकी दब जाती है। कोई भल बहुत अच्छा भाषण भी करते हैं; परन्तु क्रिमिनल आई कारण बुद्धि भ्रमित हो जाती है। उनका भाषण रिफाइन नहीं होगा। बाप का तो सदैव रिफ़ाइन ही है। वह है ही रिफ़ाइन बनाने वाला। ज्ञान का सागर है ना। जैसे अभी समझाते रहते हैं फिर भी समझावेंगे। कहते हैं तुमको अच्छी–2 प्वाइन्ट देता हूं। तुमको भी खुशी होती है। हिम्मत होती जाती है। राजाई स्थापन होनी ही है। जो अच्छी रीत सर्विस करेंगे वही ऊँच पद पावेंगे। कोई तो कुछ भी नहीं समझते हैं। योग भी तो चाहिए ना। याद है फर्स्ट। पढ़ाने वाले को याद करना पड़े। माया भी बड़ी प्रबल है। याद करने न देती है। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। दिल में खुशी रहनी चाहिए समझाने की। योग नहीं है तो मैनर्स भी नहीं रहती। अभी तक बहुतों के मैनर्स जानवरों से भी बदतर हैं। जैसे कि ज्ञान बिल्कुल है ही नहीं। वह क्या समझा सकेंगे? नये–2 आते हैं उनको थोड़ा भी समझाओ तो झट समझ जावेंगे। तुम्हारे सामने आवेंगे। झट समझ जावेंगे यह तो बड़ी तीखी है। फलाने तो, तुम हमको ऐसा समझाया ही नहीं; इसलिए ही कहते हैं हमको अनुभवी होशियार टीचर चाहिए। कोई को तो 20 वर्ष में भी कोई अनुभव नहीं होता। कोई को तो एक हप्ता में ही सारा अनुभव हो जाता है। नई–2 प्वाइन्ट्स मिलती है तो दिल से बहुत अच्छी लगती है। पुरानियों को धारणा होती नहीं। याद की यात्रा में न होने से स्वभाव भी बदलता नहीं। ज़रा भी नहीं। और ही कईयों का स्वभाव बिगड़ता है। पहले–2 तो ऐसा

जिसको आधा कल्प याद किया है वह मिला है कितना याद करना चाहिए। समझते तो हो ना ऊँच ते ऊँच बाप है। दुनियां में तो किसको भी पता नहीं। वह समझते हैं कृष्ण ने गीता सुनाई। अभी तुम बच्चे तो समझते उसको मनुष्य भगवान समझते हैं वह अभी लास्ट स्टेज पर है। फिर फर्स्ट स्टेज पर जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे ड्रामा के प्लैन अनुसार। अभी तुम भी समझते हो हम आते(आस्ते)–2 उतरते–2 अभी तमोप्रधान बने हैं। फिर हम श्रीमत (पर) अभी सतोप्रधान स्टेज पर जा रहे हैं। बाप हमको याद दिलाकर अभूल बनाते हैं। देवताएं कोई कब भूल, पाप....नहीं करते। कोई व्यर्थ अक्षर नहीं बोलते। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में सभी व्यर्थ है। ऐसी बातें न सुनो, न (सुनाओ)। बहुत बच्चे हैं जो आपस में लड़ते हैं, व्यर्थ बोलते हैं। बाप कहते हैं कब भी व्यर्थ न बोलो। सख़्त मना है।....व्यर्थ कोई बोले भी तो तुम रेसपाण्ड न करो। चले जाओ; परन्तु रेसपॉण्ड ज़रूर कर देते हैं। बाप की शिक्षा पर ..... तो कोई झगड़ा आदि न हो। हियर नो ईविल .....का अर्थ दुनियां में कोई नहीं जानते हैं। महारथी ..... समझते हैं। व्यर्थ बोलना ईविल है। एक ने बोला तो दूसरा कान बन्द कर लेवे। इससे भी बेहतर (ि)कनारा कर लेना। किसमें भूत आता है तो वह अच्छा नहीं लगता है। किनारा करना अच्छा है। नहीं तो तुम्हारे (में) भी भूत आ जावेगा। न सुनने से दिल को रंज नहीं होगा। रंज होता है तब तो कचहड़ी(री) की जाती (है।) (य)हां तो खीर खण्ड हो रहना चाहिए। लूण–पानी होने की दरकार ही नहीं। तुम चुप रहो। एक मिसाल देते हैं ना। दो डेरानी लड़ती थी तो उसने कहा मुख में मुहलरा डाल दो तो बोल न सकेंगे। बहुत (भूत) होते हैं झूल–2 कर थक जाते हैं फिर उनको पानी पिलाते हैं। बाप तो रोज़ समझाते रहते हैं। एक/दो को भाई–2 देखो। जिस्म ही नहीं तो फिर किससे बोलेंगे। भाई–2 की दृष्टि रखो तो चुप रहेंगे। चुप (होने) का ही नॉलेज मिलता है। बाप को याद करो। मुख से कुछ भी बोलो नहीं । बाप को याद करना है और पढ़ाई.... चुप रहना है। बात करने की दरकार ही नहीं। यह तो समझाना होता है कि ऐसे करने से तुम याद कर सकते (हो)। स्वदर्शनचक्रधारी बन बाप की याद में रहते रहो। बाप बच्चों को सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान भी (सुना)ते हैं और फिर शान्ति का सागर भी है। तुम उनके बच्चे हो। तुम भी शान्ति के सागर बन जावेंगे। तुम भी .... वापस जावेंगे तो तुमको ऐसे ही कहेंगे। शान्ति का सागर, सुख का सागर .....फिर तुम यहां आते हो तो .... बदल जाता है। फिर है प्रारब्ध। यह सारी ड्रामा में नूँध है। बाप कल्प–2 तुमको समझाते हैं। बाप का (कि)तना वण्डरफुल नॉलेज है! (य)ह कोई मनुष्य का नॉलेज नहीं है। बेहद का बाप जो निराकार है, नॉलेजफुल है (उन)की यह नॉलेज है। और कोई दे न सके। इसको कहा जाता है रूहानी बाप की नॉलेज। कितना प्यार से पूजा (करते) हैं। ज़रूर कुछ किया होगा। यह ल.ना. विश्व के मालिक होकर गये हैं और पवित्र थे; इसलिए अपवित्र (मनु)ष्य उन्हों के आगे माथा टेकते हैं। वास्तव में पतित को पतित के आगे माथा टेकना नहीं चाहिए। (क)न्या भी पवित्र है तो सभी उनको माथा टेकते हैं। फिर जब अपवित्र बनती है तो सभी के आगे माथा टेकना (प)ड़ता है। सन्यासी भल पवित्र रहते हैं; परन्तु सदैव पवित्रता हो न सके। जन्म विकार से ही लेते हैं। यह है (ही) पतित दुनियां। एवर पवित्र तो कोई हो न सके। रावण राज्य के बाद ही यह पतित होते हैं। उनको कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां। वायसलेस वर्ल्ड। यह है विषयस वर्ल्ड। मनुष्यों की बुद्धि में (यह) नहीं आता है कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म वायसलेस था। फिर कहेंगे सेमी वायसलेस। फिर होते हैं (से)मी विषयस। अभी तो हैं विषयस। कलाएं कम होती जाती हैं। पुरुषार्थ कर जाना तो चाहिए ना फुल वायसलेस (वर्ल्ड) में। मैं तुमको पढ़ाता हूं स्वर्ग का मालिक बनाने। पीछे तो सेमी स्वर्ग कहेंगे। पूजा भी पहले अव्यभिचारी फिर (व्य)भिचारी होती है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। समझाते–2 कहते हैं मीठे–2 बच्चों याद की यात्रा ..... न भूलना। यह याद की यात्रा ही वायसलेस बनावेगी। जो फिर तुम वायसलेस वर्ल्ड में जा सको। जो बहुत....पढ़ेंगे वही वायसलेस वर्ल्ड में आवेंगे। जो फेल होते हैं उनकी यह शान्ति है जो रामचन्द्र को दिखाते हैं।

तो बाप समझाते हैं बच्चे, अभी निरन्तर बाप को याद करना है। बहुत ही सहज करके समझाते हैं और बहुत ही प्यार से समझाते हैं। इस समय है भक्ति का राज्य, जिसको रावण राज्य कहा जाता है सारे विश्व में। सतयुग में यह वेद–शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सभी पीछे निकलते हैं। भक्तिमार्ग में कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं। मेहनत करते हैं। जब यज्ञ रचते हैं तो शालीग्राम बनाकर पूजा करते हैं। फिर उनको तोड़ देते हैं। उत्पत्ति, पालना कर फिर विनाश कर देते हैं। वह सभी हैं हद की बातें। कितनी मेहनत होती है। तुमको तो कोई मेहनत नहीं। सिर्फ अलफ और बे को समझाना है। बाप को याद करना है वही पतित–पावन है। पावन भी बनना है। बस, और क्या चाहिए? परन्तु यह भी माया भुला देती है। नॉलेज तो बहुत सहज है। अकेला कोई पढ़ सकते हैं। ऐसे बहुत हैं जो गुप्त पुरुषार्थ करते रहते हैं। आकर ऊँच पद पा लेंगे। तुम्हारे शास्त्र में भी भील और अर्जुन का मिसाल है। भील तो सभी हैं ना। तुम्हारे सिवाय सभी को भील कहो, बन्दर कहो, जो चाहे सो कहो। हो सकता है कोई ऐसे तेज़ बुद्धिवान भी आये तो सुनने से ही झट समझ जाये। बाप को याद करना है। देवी–देवता बनने लिए बाप को याद करना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। बस ना। याद करते–2 शरीर छोड़ देना है। यह तो कोई भी कर सकते हैं। ऐसे भी निकल पड़ेंगे। तुमको पता भी नहीं पड़ेगा। वह आकर अपना वर्सा ले लेंगे। हो सकता है अगर इस अवस्था में याद करते रहें, जंगल में भी जाकर रहें तो भी उनमें ताकत बहुत रहती है। उनको कब कोई खाना आदि न पहुँचावें, यह हो नहीं सकता; क्योंकि ताकत बहुत रहती है। और भी उनके पास जाते रहेंगे। और जो आवेंगे उनको भी अलफ़ ओ(और) बे सुनाते रहेंगे। तो बच्चों को एक तो याद करना है, दैवीगुण धारण करनी है। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। जब तुम्हारे में जौहर भर जावेगा तो फिर झाड़ जल्दी–2 वृद्धि को पाता रहेगा। तुम्हारा नामाचार भी होगा। बाप के आगे तो सभी को सिर झुकाना है। समझेंगे यह ज्ञान की (बाण) तो उस बाप ने ही भरी है। कोई साधारण गुरू नहीं है। यह भी ऐसे। यह तो बाप ही बाण भरते हैं। ऐसे बाप को बहुत खुशी से हर्षितमुख से याद करना चाहिए। तुम्हारा हर्षितमुख फिर अविनाशी बन जाता है। जितना–2 योग में रहेंगे तो बचते रहेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना दैवीगुण भी धारण होते जावेंगे। वह लोग तो कितने हठयोग आदि करते हैं। जानते कुछ भी नहीं। तुमको तो हठयोग आदि भी न करना है। यह ध्यान आदि में जाना यह तुम्हारी गुप्त बातें हैं। यह किसको दिखलाने का नहीं है। हठयोगी मिसल हो जाये। बाप तो इन ध्यान, दीदार से भी हटाते हैं। बस ध्यान में जाना मिथ्या है। बाप तो कहते हैं यह ध्यान आदि में जाना बन्द करो। रोज़ कहेंगे आज बाबा आया, आज मम्मा आई। ज्ञान तो डायरैक्ट बाप ही देते हैं ना इस (र)थ द्वारा। बाकी क्या? बाबा–मम्मा आकर कोई एडवांस में कोई ऐसी प्वाइन्ट देंगे क्या जो सुनी न हो? बाप तो सभी कुछ देते रहते हैं इन द्वारा। भल किसको उठाने लिए बाबा प्रवेश कर ज्ञान भी देते हैं। उनमे अहंकार न आना चाहिए। यह टेव न रखनी चाहिए। बाप को तो अनायास ही आकर उठाना होता है। बाप कहते है मैं सभी का सर्वेन्ट हूं। अहंकार की बात नहीं। याद की यात्रा से ही बच्चों में ताकत आवेगी। जब तुम भाई–2 समझकर एक/दो को देखेंगे तो हो सकता है सा. भी हो जाये विनाश, बचपन का। सभी कृष्ण का सा. नहीं करते हैं। प्रिन्स तो बहुत हैं ना। तो बचपन का सा. होता है। जैसी अवस्था वैसी सा. होता है। तुम याद की यात्रा में रहेंगे तो मालिक भी बनेंगे। बाकी सा. आदि की बातों में खुश न होना चाहिए। मूल बात है याद की यात्रा। बहुत ही प्यार से याद (करना) चाहिए। मोस्ट बिलवेड बाप है। यह है उनका मुरब्बी बच्चा । आपस में यही रेस करो। एक/दो को सावधान करना है। बाप की याद (में) हो? स्वदर्शनचक्रधारी हो। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान की रेस। चलते–फिरते, उठते–बैठते .... शौक होना चाहिए। जो अपनी–2 उन्नति चाहते हैं तो मेहनत करनी पड़े। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ओमशान्ति।